बाइबिल सार

जन-जन की भाषा में

बाइबिल सार

जन-जन की भाषा में

ग्रंथकार :

श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता

आत्मोन्नति प्रकाशन

(बेटर योरसेल्फ बुक्स)

28–बी, चैथम लाइन्स, रानीपुर, इलाहाबाद-211002 (उ.प्र.)

बाइबिल सार जन-जन की भाषा में

Essence of the Bible in common people's language

By Shri Rajendra Kumar Gupta

Copyright : Shri Rajendra Kumar Gupta and
Atmonnati Prakashan

1st Edition : August, 2010

ISBN: 978-81-89341-61-9

Rs. 450.00

Published by Atmonnati Prakashan

28-B, Chatham Lines, Ranipur, Allahabad- 211 002, U.P.

Printed by Amar Mudranalaya

15/1/7, Katra Road, Madhokunj, Allahabad- 211 002

बाइबिल सार

विषय-सूची

पृष्ठ

लेखक की कलम से 7
समर्पण 8
आशीर्वाद पत्र 9
घोषणा पत्र 10
प्राक्कथन 11
आभार ज्ञापन 12
मूल्यांकन 13

पुराना विधान

उत्पत्ति 15
निर्गमन 42
लैव्य व्यवस्था 59
गिनती 68
व्यवस्था विवरण 81
यहोशू (योशुआ) 88
न्यायियों 96
रूत 106
1 शमूएल 108
2 शमूएल 118
1 राजा 127
2 राजा 139
1 व 2 इतिहास 154
एज्रा 155
नहेमायाह (नहेम्या) 158
एस्तेर 163
अय्यूब (योब) 168
भजन संहिता (स्तोत्र) 179
नीतिवचन (सूक्ति) 180
सभोपदेशक 192
श्रेष्ठगीत 199
यशायाह (इसायाह) 200
यिर्मयाह 217
विलापगीत 235
यहेज़केल (एज़ेकिएल) 239
दानिय्येल 262
होशे (होशेआ) 275
योएल 282
आमोस 286
ओबद्याह 293

योना 295
मीका 299
नहूम 305
हबक्कूक 308
सपन्याह 311
हाग्गै 314
ज़कर्याह 316
मलाकी 325

नया विधान

मत्ती 330
मारकुस 371
लूका 372
यूहन्ना (योहन) 383
प्रेरितों के काम 408
रोमियों 439
1 कुरिन्थियों 453
2 कुरिन्थियों 467
गलातियों 476
इफिसियों 482
फिलिप्पियों 487
कुलुस्सियों 491
1 थिस्सलुनीकियों 495
2 थिस्सलुनीकियों 498
1 तिमुथियुस 500
2 तिमुथियुस 504
तीतुस 508
फिलेमोन 510
इब्रानियों 512
याकूब 523
1 पतरस (पेत्रुस) 528
2 पतरस (पेत्रुस) 533
1 यूहन्ना (योहन) 537
2 यूहन्ना (योहन) 543
3 यूहन्ना (योहन) 544
यहूदा (यूदस) 545
प्रकाशित वाक्य 547

लेखक की कलम से.....

'श्रीमद्भगवदगीता – जन-जन की भाषा में' एवं 'कुरआन सार – जन-जन की भाषा में' के क्रम में 'बाइबिल सार – जन-जन की भाषा में' आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस कार्य का उद्देश्य बाइबिल के सार को साधारण जन की भाषा में सरल रूप में प्रस्तुत करना है जिससे साधारण जन बाइबिल के सार तत्व को पढ़ सकें व समझ सकें। यह बाइबिल का न तो अनुवाद है, न ही उस पर टीका। इस कार्य में यथा-संभव यह प्रयास किया गया है कि जो बातें बाइबिल में दोहरायी गयी हैं, उन्हें बाइबिल सार में दोहराया न जाए ताकि पुस्तक का आकार सीमित रह सके व पाठकों के लिए इसका पढ़ना सुविधाजनक रहे। पाठकों की सुविधा के लिए प्रत्येक अध्याय में क्रमशः शीर्षक भी दिए गए हैं लेकिन 'व्यवस्था विवरण' अध्याय में शीर्षक नहीं दिए जा सके। कहीं-कहीं पर कुछ शीषर्क एक साथ दे दिए गए हैं। इस बाइबिल सार में कुछ अध्यायों यथा 'इतिहास', 'भजन संहिता' एवं 'श्रेष्ठगीत' को भी शामिल नहीं किया गया है। इसके अलावा 'मारकुस' एवं 'लूका' में 'मत्ती' से बहुत अधिक समानता होने के कारण, इन अध्यायों के वे ही भाग सम्मिलित किये गये हैं जो 'मत्ती' से भिन्न हैं।

इस कार्य को पूर्ण करने में मुझे लगभग उन्नीस माह का समय लगा। इस दौरान मुझे अपने परिवार का जो सहयोग मिला, मैं उसके लिये उनका आभारी हूँ।

मैं समझता हूँ कि यह कार्य दैवी प्रेरणा का ही परिणाम है एवं उसी की कृपा से यह सम्पन्न हुआ। यद्यपि इस कार्य में यथासंभव बाइबिल के शब्दों का ही प्रयोग किया गया है और प्रयास किया गया है कि इस कवितामय सार में बाइबिल के मूल पाठ का सारतत्व यथारूप प्रस्तुत हो, फिर भी मेरी अपात्रता के कारण, जाने-अनजाने त्रुटियों का समावेश हो जाना स्वाभाविक है। आशा है विज्ञ एवं सहृदय पाठक इसे अन्यथा न लेंगे।

(राजेन्द्र कुमार गुप्ता)

सम्पर्क सूत्र : R. K. Gupta
e-mail : rkgupta51@yahoo.com
Phone : +91-9899666200
+91-11-22718010
Residence : 27/103, East End Apartments,
Mayur Vihar Ph.1 Ex., Delhi 110 096
Web site : http://sufisaints.net

"नूर का एक दरिया है तू,
परम शांत और आनन्द से भरा,
प्रेम का तू अजस्त्र स्त्रोत है,
और मैं हूँ तेरा एक कतरा ।"

**गुरु भगवान परमसंत ठाकुर रामसिंह जी भाटी,
एवं महात्मा डॉ. चन्द्र गुप्ता जी और
महात्मा श्री कृष्ण कुमार गुप्ता जी के
श्रीचरणों में समर्पित**

Archbishop Vincent M. Concessao
Archbishop of Delhi

Archbishop's House
1, Ashok Place
New Delhi - 110 001 (INDIA)
Phone : 23343457, 23362058
E-mail : archbishopdelhi@yahoo.co.in
Fax : 91-011-23746575

Ref. No. GA/0101/2010 **February 9, 2010**

Mr. R.K. Gupta
27/103 East End Apartments
Mayur Vihar Phase-I Extn,
Delhi – 11 - - 96

Dear Mr. Gupta,

I glanced through your book titled ‘‘Bible Saar’’- an essence of the Holy Bible. It is commendable that you have taken this initiative to bring the message of the Holy Bible through poetry, even though you yourself belong to a different religious tradition. I am sure your book will help the readers specially thore who love poetic language to appreciate the message of the Bible.

With warm regards and wishing you God's blessings in your noble works.

Yours sincerely,

+ Vincent M. Concessao
Archbishop of Delhi

घोषणा-पत्र

REGIONAL BIBLE INSTITUTE

sugranth subodhana

(Of the Agra Ecclesiastical Region)

Date ....

<u>TO WHOM SOEVER IT MAY CONCERN</u>

This is to certify that I have gone through the book ‘Bible Saar’, and I find it free from any Scriptural error to the best of my ability. Keeping in mind particularly that a Hindu has written about Jesus, I find it worthy of publication.

Fr Thomas D'Sa
Director

date : 1st Feb 2010
Place : Bareilly

Director
Sugranth Sobodhana
Regional Bible Institute
HARUNAGLA
P.O. UNIVERSITY-243006,
BAREILLY

Address : Regional Bible Institute, Haru Nagla, Golden Green Park Road, University Post, 243 006, Bareilly, U.P.
E-mail : regbibinst@yahoo.com Tel. : 09412761785, 0581-2520018

Dr. Mrs. Manju Jyotsna
M.A., M.Ed., Ph.D., D. Litt.
Emeritus Fellow, U.G.C.
(St. Xavier's College, Ranchi)
Former University Prof. & Head of the Department, Hindi, Ranchi University
Former Member, Bihar State University Service Commission.

Tel. : 0651-2201868
Mob. : 0-9334147500
Address :
1-B, Akshay Bhawan
R.G. Street, Tharpakhana
Ranchi 834 001, Jharkhand

प्राक्कथन

बाइबिल एक ग्रन्थ है, जिसका अनुवाद विश्व की अनेक भाषाओं में हुआ है। इसका मूल रूप इब्रानी, अरामी और यूनानी भाषाओं में मिलता है। हिन्दी में इसका प्रथम अनुवाद 1818 में सिरामपुर में विलियम केरी ने किया। तब भी इसका यही उद्देश्य था कि यह सर्वजन सुलभ हो। इसी उद्देश्य से इसका अनुवाद भारत की कई भाषाओं के साथ हिन्दी की कई उप-बोलियों-बोलियों में भी हुआ था। लेकिन आज श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता का यह पद्यानुवाद पढ़कर मुझे लिखना पड़ेगा कि सहज भाषा में, स्पष्ट अभिव्यक्ति के साथ सटीक पद्यानुवाद का यह अनूठा प्रयास है। बाइबिल के शब्दों के साथ, बाइबिल की घटनाओं का कथा प्रवाह 'पुराना विधान' से बहता हुआ बड़ी कुशलता के साथ 'नया विधान' तक चलता है। इस पद्यानुवाद में बाइबिल के सागर से बड़ी दक्षता के साथ उन्हीं अंशों का चयन किया गया है जिनसे कथा आगे बढ़ती है। यह अनुवादक की और एक कुशल शिल्पी की पारखी नजर का ही कमाल है। राजेन्द्र जी का उद्देश्य भी पूर्ण होता है कि उनकी यह पद्यात्मक कृति पठनीय है और यही पुस्तक की सार्थकता भी है।

विषय और भाषा पर जैसे उनको अधिकार प्राप्त है तभी उन्होंने बाइबिल की गद्यात्मकता को पद्यात्मकता में सजा दिया है। बाइबिल एक धर्मग्रन्थ है जिसकी उक्तियों, घटनाओं और उसके तेवर से छेड़छाड़ नहीं की जा सकती। राजेन्द्र जी ने इसकी रक्षा का उत्तरदायित्व भी वहन किया है। बाइबिल के विशद कलेवर को छोटे सुधा-चषक में प्रस्तुत करने के श्लाघनीय प्रयास के हम कायल हैं।

मैं आशा करती हूँ और मेरी शुभकामना भी है कि आपकी यह पुस्तक धर्म, वर्ग और वर्ण के दायरे तोड़कर पाठकों को तुष्ट करेगी।

मंजु ज्योत्स्ना
01-02-2010

आभार ज्ञापन

''बाइबिल सार'' जन-जन की भाषा में श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता द्वारा प्रणीत काव्यात्मक पवित्र अभिव्यक्ति है।

इस काव्यात्मक ग्रंथ का अध्ययन, मनन-चिन्तन आध्यात्मिक चिंतकों एवं मनीषियों के लिए जितना उपयोगी है उतना ही जन-साधारण के लिए भी है। इस काव्यात्मक धर्मग्रंथ में रचनाकार ने प्रभु येसु मसीह की भक्ति और आराधना का सरल मार्ग प्रशस्त करने का स्तुत्य प्रयास किया है।

कर्त्तव्यों का परित्याग करके ईश्वर के प्रति भक्ति व्यक्त नहीं की जा सकती है। बाइबिल सिखाती है कि सुधरी हुई विचारधारा का मनुष्य ही देवता कहलाता है। परोपकार में लगे हुए येसु के लिए संसार में कुछ दुर्लभ नहीं है। ज्ञान ही मनुष्य का परम मित्र है और अज्ञान उसका शत्रु। ईश्वर के प्रति कर्मनिष्ठा में विश्वास रखने वाले आयु के बंधन में नहीं बँधते। स्वर्ग जैसी वरिष्ठता प्राप्त करने के लिए दिव्य जीवन में प्रवेश किये बिना और कोई उपाय नहीं है। प्रेम और विश्वास जीवन की सर्वोच्च सिद्धि है, इस काव्यात्मक धर्मग्रंथ का यही संदेश है। इस कृति के रचनाकार के प्रति मैं अपना आभार प्रकट करता हूँ।

पी0एस0 यादव
भूतपूर्व प्राध्यापक
ईश्वर शरण कॉलेज,
इलाहाबाद

मूल्यांकन

बाइबिल सार–जन-जन की काव्य भाषा में

कितनी सरल भाषा में कोई रचना कर सकता है? कुछ लोग सोचेंगे कि पद्य होने के कारण भाषा में कठिनाई आयी होगी क्योंकि पद्य में लोग जटिल शब्दों का प्रयोग जरूर करते हैं। पर श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता ने बाइबिल के पद्यानुवाद में बाइबिल को पद्यरूप देने में सबसे सरल, सरस और प्रांजल भाषा का प्रयोग किया है। उत्पत्ति से आरंभ करके अंत तक उसी भाषा का निर्वाहा है।

उदाहरण के लिए आरंभ में : ''परमेश्वर ने शुरू करी सृष्टि रचना
आकाश और पृथ्वी को बनाकर,
बेडोल और सुनसान थी पृथ्वी,
कुछ भी नहीं था तब धरती पर।
घनघोर अंधेरा था तब छाया,
'हो उजियाला' परमेश्वर ने कहा,
अच्छा जानकर उजियाले को,
पृथक अंधेरे से उसको किया।''

आरंभ में एक स्थान पर 'स्त्री' की सृष्टि भी आ जाती है। हम सोचते हैं कि इस अवसर पर भाषा अधिक भावयुक्त होगी और फलस्वरूप कठिन। पर ऐसी नहीं है। वहाँ भी सरल, सटीक और संयमित भाषा का प्रयोग हुआ है।

यहोवा उसे लाया मनुष्य के पास,
तब उसे देख मनुष्य ने यह कहा,
आया है इसका शरीर मेरे शरीर से,
इसलिए इसके साथ मैं रहूँगा सदा।

आगे बढ़ते अनुवाद में और भी अधिक सरलता आयी है। कहीं-कहीं नया विधान का अनुवाद बिलकुल सरल, प्राकृतिक और सहज है। एक-दो उदाहरण इसके लिए काफी हैं–

यीशू मंदिर में

''फिर यीशू मंदिर के अहाते में आया,
खदेड़ा खरीद-बेच करने वालों को उसने,
मंदिर में कुछ अंधे, लंगड़े, लूले थे,
कर दिया चंगा जिन्हें यीशू ने।
कहने लगे बच्चे ऊँचे स्वर में,
'होशन्ना'! धन्य है दाऊद का वह पुत्र,
क्रोधित हुए याजक और धर्मशास्त्री,
देख यीशू के वे अद्‌भुत कृत्य।''

सहजता और सरलता के लिए एक और उदाहरण प्रस्तुत है :

उसी दिन पुनर्जीवन को नहीं मानने वाले,
कुछ सदूकी लोग यीशू के पास आये,
पूछा उन्होंने मूसा के उपदेश के अनुसार,
निस्संतान विधवा को मृतक का भाई अपनाये।
अब मानो हम सात भाई हैं,
क्रम से निस्संतान जो मरते गये,
उन सबके बाद स्त्री भी मर गयी,
उस बारे में हम तुझसे पूछने आये।
अगले जन्म में इन सातों में से,
वह स्त्री होगी पत्नी किसकी,
क्योंकि पूर्व जन्म में वह स्त्री
पत्नी बनी थी उन सातों की।
कहा यीशू ने तुम नहीं जानते,
शक्ति शास्त्रों की या परमेश्वर की,
देवदूतों के समान होंगे पुनर्जीवन में,
होगी न उस जीवन में कोई शादी।
कहा था उसने, मैं परमेश्वर हूँ
इब्राहीम, इसहाक और याकूब का,
मरे हुओं का नहीं है वो,
वह परमेश्वर है जीवित लोगों का।

कितनी सरल, सुंदर और सटीक अभिव्यक्ति है दोनों की– प्रभु येसु की और सदूकियों की। इस पद्यानुवाद को कवि ने अंत तक निभाया है जिसे पढ़ना अच्छा लगता है। आपको भी यह अच्छा लगे, यही मेरी शुभकामना है। यदि कहीं दुरूहता है तो वह मूल पर आधारित है जैसे ''प्रकाशित वाक्य'' में मिलता है। निम्नलिखित पंक्तियों में **''संसार के लोगों का न्याय''** वर्णित है–

फिर मैंने एक विशाल श्वेत सिंहासन,
और जो उस पर विराजमान था, उसे देखा,
धरती आकाश भाग गये उसके सामने से,
कहाँ गये उनका पता तक न चला।
फिर मृतक खड़े देखे सिंहासन के सामने,
पुस्तकों में लिखे कर्मानुसार न्याय हुआ उनका,
जिनके नाम जीवन की पुस्तक में नहीं थे,
उन्हें भी आग की झील में गया धकेला।

फा. डा. मैथ्यु लिओ वेच्चूर, हिन्दी विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय